विषय में सीखते हैं।

कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने ये पर्व केवल इस्राइल को ही दिये।लेकिन मसीह ने सबको परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए कहा (मत्ती 5:17-19)। पौलुस, युहन्ना तथा दूसरे प्ररितों ने भी यही सिखाया कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं को तथा पर्वों से सम्बन्धित आज्ञाओं को भी माने (कुरिन्थियों 5:8, यूहन्ना 5:3)। मसीह ने भी इन पर्वों को मनाया (युहन्ना 2:23, 7:10, 14:37,)। शुरू के मसीही भी इन पर्वों को मनाते थे (प्ररितों के काम 2:1, 18:21, 20:6, 16) और विषय में प्रत्येक जन इनको मनायेगा : "और ऐसा होगा.....झोपड़ियों का पर्व मनायेगें" (जकर्याह 14:16)। परमेश्वर ने अपने पर्व सब लोगों के लिए बनाये हैं।

परमेश्वर द्वारा दिया गया पहला पर्व सब्त है: "छः दिन तुम काम करो.....यह परमेश्वर का विश्राम दिवस है" (लैव्यव्यवस्था 23:3)। प्रत्येक सप्ताह परमेश्वर ने मनुष्यों को अपना काम करने के लिए छः दिन दिये हैं सातवाँ दिन लोगों द्वारा ईश्वरीय मार्ग सिखाने के लिए है।

सब्त परमेश्वर की योजनाओं की मुख्य रूप रेखा को दर्शाता है। परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी तरह से चलने से हजारों वर्ष दिये हैं। इसके पश्चात मसीह इस पृथ्वी पर 1000 वर्ष राज्य करने और परमेश्वर के रास्तों को सिखाने के लिए आयेगा। सब्त जो कि प्रत्येक सप्ताह का आखिरी दिन है इन्ही 1000 वर्ष के समय को दिखाता है जब परमेश्वर अपना राज्य इस पृथ्वी पर स्थापित करेगा। सब्त ही एक मात्र पर्व है जो प्रत्येक सप्ताह बार बार आता हैअन्य पर्व वर्ष में एक बार आते हैं। ये वार्षिक पर्व दिखाते हैं कि परमेश्वर अपनी योजना को किस प्रकार पूरा कर रहा है।

परमेश्वर का लक्ष्य क्या है?

परमेश्वर लोगों को नये संसार में सदा का जीवन देने की तेयारी कर रहा है। प्रकाशित वाक्य 21:4 में बाइबिल बताती है कि आने वाले संसार में कोई मृत्यु नहीं रहेगी और न शोक होगा, न विलाप, न पीड़ा रहेगी क्यों कि पुरानी व्यवस्था समाप्त हो गयी है।" संसार के दुखों तथा समस्याओं से छुटकारे का एक मात्र मार्ग है कि प्रत्येक मनुष्य सिद्ध हो। यदि कभी कोई व्यक्ति ऐसा कोई कार्य करता है जो दुःख का कारण हो तो यह संसार कभी भी सिद्ध नहीं होगा।

जो लोग दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, जो परमेश्वर के नियमों को तोडते हैं परमेश्वर उन लोगों को कभी भी अपने राज्य में शामिल नहीं होने देगा क्यों कि पाप की सजा मृत्यु है (रोमियो 6:23) फिर भी सबने पाप किया है इसके लिए सबको सदा के लिए मृत्यु प्राप्त होनी चाहिए (रोमियो 3:23)।

सबसे पहला वार्षिक पर्व "फसह का पर्व है" (लैव्यव्यवस्था 23:5)। यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर किस प्रकार मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। परमेश्वर नहीं चाहता कि लोग सदा की मृत्यु को प्राप्त हों। वह चाहता है कि लोग अपने आप को बदलें : मुझे किसी की मृत्यु में आनन्द नहीं होता परमेश्वर कहता है" इसलिए अपने आप को बदलो और जीवन प्राप्त करो" (यहेजकेल 18:32)। इन लोगों को भी जो अपने आप को बदलते हैं। और वही काम करते हैं उन पापों की सजा पानी है जो उन्होंने पहले किये थे। यदि हमें स्वयं पाप के दण्ड को भोगना पडता है तो हम सदा के मर जाते हैं। लेकिन परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को अपने पापों को दण्ड भोगने के लिए भेजा। यही फसह का सही अर्थ है: मसीह जो हमारी फसह है हमारे लिए बलिदान हुआ" (कुरिन्थियों 5:7)। यदि हम आपने जीवन के गलत रास्ते को बदलते हैं तो परमेश्वर यीशु मसीह की मृत्यु को हमारे पापों की सजा के स्थान पर गृहण करेगा।

फसह के पर्व के तुरन्त बात अखमीरी रोटी का पर्व आता है जो दूसरा वार्षिक पर्व है। (लैव्यव्यवस्था 23:6) में लिखा है कि और इसी महीने के 15 वें दिन को यहोवा के लिए अखमीरी रोटी का पर्व हुआ करे उसमें तुम सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना है यह पर्व हमें परमेश्वर की योजनाओं के दूसरे चरण को समझाता है। जब परमेश्वर ने हमारे पुराने पापों को क्षमा कर दिया तो हमें परमेश्वर की सहायता से अपनी पाप से भरी गन्दी आदतों पर विजय पानी चाहिए। अखमीरी रोटी के पर्व के समय में परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम अपने घरों से खमीर को हटा दें तथा खाने में इसका प्रयोग न करें (निर्गमन 2:15)। वे कार्य जो ईश्वर हमें उसके पर्वों के समय में करने को कहता है आत्मिक शिक्षायें सिखाने में हमारी मदद करते हैं। अखमीरी रोटी के पर्व के दौरान खमीर को पाप का चिन्ह माना गया है। पौलुस ने मसीहों को बताया कि इस पर्व को मनाते समय उन्हें अपनी दृष्टि अपने जीवन से पाप को हटाने पर केन्द्रित करनी चाहिए। वह लिखते हैं "इसलिए आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें" न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दृष्टिता के खमीर से परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से (कुरिन्थियों 5:8)।

तीसरा वार्षिक पर्व हमें परमेश्वर की योजना के तीसरे चरण के बारे में सिखाता है: परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा बहुत थोड़े लोगों को दे रहा है।मसीह के पुनरूत्थान के 50 दिन बाद शुरू के मसीही पिन्तेकुस्त पर्व मनाने के लिए एकत्र हुए। प्रेरितों के काम 2: 1-4 में लिखा है कि पिन्तेकुस्त के दिन जब वे एक स्थान पर एकत्र थे तभी अचानक आकाश से तेज हवा की आवाज आयी और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये।

परमेश्वर अपनी आत्मा उनको देते हैं जो पश्चाताप करते हैं तथा बपतिस्मा लेते हैं पश्चाताप का अर्थ है बदलाव - गलत काम को बन्द करना और सही को शुरू करना। पूर्ण पश्चाताप में सम्मिलित होता है कि आप हमेंशा के लिएअपने पापमय जीवन को त्याग कर परमेश्वर के बताये रास्ते पर चलने के लिए वचनबद्ध हैं। जब हम वपतिस्मा लेते हैं तो हम इस बात के वचनबद्ध होते हैं। प्रेरितों के काम 2:38 में बाइबिल बताती है कि "पश्चाताप करो और पापों की मुक्ति के लिए मसीह के नाम में बपतिस्मा लो और तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा"।

पवित्र आत्मा हमें पापों से मुक्ति दिलाने में सहायता करता है (रोगियों 8:40) और हमें आत्मिक समझ देता है। परमेश्वर ने मनुष्य को आश्चर्यजनक मस्तिष्क दिया है इसलिए हम भौतिक बातों को समझ सकते हैं। परन्तु परमेश्वर ने हमें आत्मिक बातों को समझने की योग्यता नहीं दी है। बाइबिल हमें इस बात को बताती है कि परमेश्वर की बातों को पवित्र आत्मा के अलावा कोई नहीं जान सकता (1 कुरिन्थियों 2:11)। हम पवित्र आत्मा के बिना न तो परमेश्वर की योजनाओं को समझ सकते हैं न ही उसके बताये रास्तों को। बाइबिल कहती है "परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्यों कि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्यों कि उनकी जॉच आत्मिक रीति से होती है" (पद 4)

वर्तमान समय में परमेश्वर सब लोगों को आत्मिक ज्ञान नहीं दे रहा है। जब मसीह से उसके चेलों ने पूछा कि वह लोगों को अपनी बातें दृष्टान्तों में क्यों समझाता है तो मसीह ने उत्तर दिया, "परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है, इन लोगों को नहीं"(मत्ती 13:11)। अभी परमेश्वर कुछ लोगों को सिखा रहा है। वह उस समय की प्रतीक्षा में है जब वह सभी को यह बातें सिखाएगा।

चौथा वार्षिक पर्व तुरही का पर्व है (लैव्यव्यवस्था 3:24)। यह पर्व उस समय को दर्शाता है जब यीशु मसीह दोबारा इस पृथ्वी पर राज्य करने के लिए राजा के रूप में आयेगा। यह पर्व उन लोगों के उस पहले समूल के बारे में भी सिखाता हे जो दोबारा जीवन पायेंगे। "क्यों कि परमेश्वर.....पुनर्जीवित होगें (थिस्सलुनीकियों 4:16)।" उस समय जिन्होंने सच्चाई से परमेश्वर का अनुसरण किया वे अचानक दोबारा जीवित होगें और इनके पास आत्मा द्वारा रचित नये शरीर होगें जो कभी नहीं मरेंगे।

पांचवाँ वार्षिक पर्व है-प्रायश्चित का दिन जो उस समय को दर्शाता है जब परमेश्वर इन सारी बाधाओं को दूर करेगा जो लोगों को

परमेश्वर से मेल करने से रोकती है।सबसे बड़ी बाधा शैलान है जो लोगों को धोखा देता है और उसको परमेश्वर के विरूद्ध उकसाता है। परमेश्वर शैतान को ऐसे अथाहकुंडमें डालेगा जहाँ से फिर किसी को धोखा न दे सके (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

घमण्ड परमेश्वर और मनुष्यों के बीच की दूसरी बाधा है। परमेश्वर सब लोगों को नम्र करेगा ताकि वे सीखें कि उनको परमेश्वर पर ही भरोसा करना है। बाइबिल हमें सिखाती है कि हमें प्रायश्चित के दिन न कुछ खाना है न पीना। जब हम उपवास करते हैं तो कमजोर हो जाते हैं और सीखते हैं कि परमेश्वर की सहायता चाहिए। जब मसीह सारे संसार पर राज्य करेगा और पूरे संसार का राजा होगा, उस समय वह अपनी आशीषों तथा दण्ड द्वारा मनुष्यों को सिखाएगा और उनको नम्र बनायेगा। "पृथ्वी के कुलो.....जायेंगे (14:17,18)। झोपड़ियों का पर्व यीशु मसीह द्वारा इस संसार पर एक हजार वर्ष राज्य करने के समय को दर्शाता है कि कैसे मसीह लोगों को उस जीवन के मार्ग की शिक्षा देगा जो खुशी की ओर ले जाता है। जो लोग आज परमेश्वर के बताए मार्ग पर चलते हैं वे जीवन के सच्चे मार्ग को सिखाने में मसीह की सहायता करेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:6)।" वह शान्ति और खुशी का अद्‌भुद समय होगा। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के साथ शान्ति से रहना सीखेगा, कोई युद्ध नहीं होगा" (यशायाह 1:2-4)। "उस समय न कोई अकाल होगा न लोग भूखे मरेंगे और न कोई भयानक बीमारी होगी। (यशायाह 35:5-7)।,(आमोस 9:13)।

सात दिनों के झोपड़ियों के पर्व के बाद एक और पर्व आता है जो आठवें दिन होता है(लैव्यव्यवस्था 23:26)। यह आठवाँ दिन शान्ति के एक हजार वर्ष के राज्य के बाद के समय को दर्शाता है। उस समय प्रत्येक जन जो कभी जिये या मरे हैं, फिर से जीने के लिए पुर्नजीवित होगें (प्रकाशितवाक्य 20:5, मत्ती 12:41-42)। उस समय इस पृथ्वी पर दोबादा भौतिक जीवन होगा और पहली बार सब लोग परमेश्वर के जीवन के मार्ग के बारे में सीखेंगे और समझेंगे (यहेजकेल 37:11-4)। जो लोग परमेश्वर के मार्ग को चुनेंगे वे हमेशा के लिए जीवित रहेगें लेकिन जो परमेश्वर का इंकार करेंगे वे दोबारा मृत्यु को प्राप्त होंगे और कभी भी जीवित नहीं पायेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:7-8)।

"परमेश्वर से उसके मार्ग को सीखने का एक मौका प्राप्त करने के पश्चात प्रत्येक जन जिसने उसके मार्ग को चुना उसके साथ सदा के लिए अनन्त शान्ति के साथ जीवित रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21)।

अब आप ईश्वर की अद्‌भुद योजना के बारे में विस्तृत रूप से जान गये हैं। परमेश्वर की योजना पूर्ण रूप से समझने के लिए आपको परमेश्वर के पर्व मनाने चाहिए। बाइबिल कहती है "बुद्धिका मूल यहोवा का भय है:.....जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं" (भजन संहिता 111:10)।

आप कब इन पर्वों को मनाना शुरू कर रहे हैं ?

अधिक जानकारी के लिये लिखें -

To learn more about the true Sabbath, ask us to send you our free booklet God's Holy Day Plan. You also might want to read our booklet Holidays or Holy Days: Does it Matter which Days We Keep? All of our Booklets are free.

You can request or download our free booklets at our web site: **www.gnmagazine.org,** or you can write to:

United Church Of God
P.O. Box 541027
Cincinnati, OH 45254-1027

E-mail: info@ucg.org

परमेश्वर की योजना क्या है ?

आपको या आपके जैसे करोड़ों लोगों को परमेश्वर ने क्यों पैदा किया है? परमेश्वर क्या कर रहा है? क्या उसकी कोई योजना है?

हजारों वर्षों से इस संसार में युद्ध, अकाल, बीमारी तथा कष्ट होते रहे हैं। लोगों की समझ में नहीं आता कि इतनी ज्यादा परेशानियाँ क्यों हैं। यदिपरमेश्वर के पास असीमित शक्ति है तो वह इन सारी समस्याओं को क्यों हल नहीं करता ? कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर की कोई योजना नहीं है और यदि है भी तो वह बेकार है। कुछ लोग इतने अधिक दुखों को देखकर सोचते हैं कि परमेश्वर है ही नहीं।

परमेश्वर है और उसके पास सारे संसार के लिए एक खास योजना भी है। हम परमेश्वर की इस योजना को कैसे जान सकते हैं? वास्तव में परमेश्वर ने विशेष पर्व बनाये हैं जिससे हमें यह पता चल सके कि वह अभी क्या कर रहा है और भविष्य में उसकी क्या योजना है। लेकिन अधिकांश मसीही ईश्वरीय पर्वों के विषय में नहीं जानते इसलिए वे परमेश्वर के उद्‌देश्य और योजनाओं को नहीं समझ पाते।

बहुत से धर्मगुरू अथवा प्रचारक कहते हैं कि हमें परमेश्वर द्वारा दिये गये पर्वों को नहीं मानना चाहिए। उनका मानना है कि इन पर्वों का मसीही लोगों के लिए कोई महत्व नहीं है। परन्तु कुलिस्सियों 2:20 में प्रेरित पौलुस ने बताया कि "तुम मनुष्य द्वारा बनाई गई रीतियों पर मत चलों जो तुमको परमेश्वर के पर्वों को उचित प्रकार से मनाने से रोकते हैं।" पौलुस ने लिखा(पद 16,17) कि "कोई तुम्हारा न्याय न करे.....न तो पर्वों के बारे में न ही नये चाँद या सब्त के दिन के बारे में जो आने वाली चीजों की परछाइयाँ है। पौलुस ने कहा पर्व भविष्य की परछाइयाँ हैं। ये हमें परमेश्वर की योजना के बारे में बताते हैं।"

परमेश्वर ने आपने सारे पर्वों का वर्णन लैव्यव्यवस्था पुस्तक के अध्याय 23 में किया है "परमेश्वर ने मूसा से कहा इस्रालियों से बात कर और उनसे कह :" ये मेरे नियुक्त पर्व हैं, ईश्वर के नियुक्त पर्व जिनको तुम्हें पवित्र मानना है। ये पर्व पवित्र सभायें हैं जिनमें परमेश्वर के लोग मिलते हैं। और परमेश्वर की योजना के